मुद्रित पृष्ठों की संख्या : 6

MHD–04

हिन्दी में स्नातकोत्तर उपाधि (एम. ए. हिन्दी)

(एम. एच. डी.)

सत्रांत परीक्षा

दिसम्बर, 2025

एम.एच.डी.–04 : नाटक और अन्य गद्य विधाएँ

समय : 3 घण्टे *अधिकतम अंक : 100*

नोट : ***प्रथम*** *प्रश्न अनिवार्य है। शेष में से किन्हीं* ***चार*** *प्रश्नों के उत्तर दीजिए।*

---

1. निम्नलिखित में से किन्हीं **तीन** अवतरणों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए : $3\times12=36$

(क) सेत सेत सब एक से, जहाँ कपूर कपास
ऐसे देस कुदेश में, कबहूँ न कीजै बास
कोकिल वायस एकसम, पंडित मूरख एकु
इन्द्रायन दाडिम विषय, जहाँ न नेकु विवेकु
बसिए ऐसे देस नहिं, कनक वृष्टि जो होय
रहिए तो दु:ख पाइए, प्राण दीजिए रोय।

(ख) भरे नैनों में मन में रूप
किसी छलिया का अमल अनूप
जल–थल, मारुत, व्योम में, जो–छाया है सब ओर
खोज–खोजकर खो गई मैं, पागल–प्रेम विभोर
भाँग से भरा हुआ यह कूप

भरा नैनों में मन में रूप

धमनी की तंत्री बजी, तू रहा लगाए कान

बलिहारी मैं, कौन तू है मेरा जीवन-प्रान

खेलता जैसे छाया-धूप।

(ग) आप शायद सोचते हों कि मैं नाटक में कोई एक निश्चित इकाई हूँ—अभिनेता, प्रस्तुतकर्ता, व्यवस्थापक या कुछ और। परन्तु मैं अपने संबंध में निश्चित रूप से कुछ नहीं कह सकता, उसी तरह जैसे इस नाटक के संबंध में नहीं कह सकता। क्योंकि यह नाटक भी अपने में मेरी ही तरह अनिश्चित है।

(घ) रसखान तो किसी की लकुटी अरु कमरिया पर तीनों पुरों का राजसिंहासन तक त्यागने को तैयार थे, पर देश-प्रेम की दुहाई देने वालों में से कितने अपने किसी

थके–माँदे भाई के फटे–पुराने कपड़ों और धूल भरे पैरों पर रीझकर; या कम से कम न खीझकर, बिना मन मैला किये कमरे की फर्श भी मैली होने देंगे ? मोटे आदमियो! तुम जरा–सा दुबले हो जाते—अपने अंदेशे से ही सही—तो न जाने कितनी ठठरियों पर माँस चढ़ जाता।

(ङ) तब तो बंगाल अभी भी जीवित है। आज भी वह अपना रास्ता खोज निकालना जानता और चाहता है। भूख से व्याकुल होकर भी यह भारत का संस्कृति–जनक सिर झुकाने को तैयार नहीं है। आज भी वह इन सब आँधी–तूफानों को झेलकर फिर से विराट रूप में फूट निकलना चाहता है। सचमुच कोई इनका कुछ नहीं कर सकता। यदि जनता में चेतना है, तो इन्हें भूखों मारने वाले नर–पिशाच नाज–चोरों का अंत दूर नहीं है।

2. 'स्कंदगुप्त' नाटक के आधारा पर प्रसाद की इतिहास-दृष्टि का विवेचन करते हुए उनकी नाट्य-कला की विशिष्टताओं का मूल्यांकन कीजिए। 16

3. 'आधे-अधूरे' नाटक के महत्व पर प्रकाश डालिए। 16

4. क्या 'ताँबे की कीड़े' को एक सफल एकांकी कहा जा सकता है ? सतर्क उत्तर दीजिए। 16

5. आचार्य रामचन्द्र शुक्ल की निबन्धशैली का विवेचन कीजिए। 16

6. 'नुक्कड़' नाटक की विशेषताओं के संदर्भ में 'औरत' का विवेचन कीजिए। 16

7. साक्षात्कार विधा को परिभाषित करते हुए श्रीकांत वर्मा के लिए साक्षात्कार 'ऑक्टोवियो पॉज' की प्रमुख विशेषताएँ बताइए। 16

8. हरिशंकर परसाई की व्यंग्य कला का सोदाहरण परिचय दीजिए। 16

9. आत्मकथा को परिभाषित करते हुए 'क्या भूलूँ क्या याद करूँ' का महत्व निरूपण कीजिए। 16

10. निम्नलिखित में से किन्हीं **दो** पर टिप्पणियाँ लिखिए :

$8 \times 2 = 16$

(क) सामाजिक यथार्थ के परिप्रेक्ष्य में 'अंधेर नगरी'

(ख) 'स्कन्दगुप्त' नाटक में अभिव्यक्त राष्ट्रीय चेतना

(ग) 'आधू-अधूरे' नाटक का नाट्य-शिल्प

(घ) तीसरे दर्जे का श्रद्धेय की अंतर्वस्तु

× × × × ×